पं विष्णु नारायण भातखंडे

पं विष्णु नारायण भातखंडे का जन्म 10 अगस्त सन् 1860 को महाराष्ट्र प्रदेश के बालकेश्वर नामक स्थान में कृष्ण जन्माष्टमी के दिन हुआ था। उन्हें पिता से, जिन्हें संगीत से बहुत प्रेम था, संगीत सीखने की प्रेरणा मिली। अतः उन्होंने अध्ययन के साथ-साथ संगीत शिक्षा भी ग्रहण की। पं जी ने सितार, गायन और बाँसुरी तीनों की शिक्षा प्राप्त की और अच्छा अभ्यास किया।

सेठ बल्लभ दास से सितार जयपुर के मुहम्मद अली खाँ, ग्वालियर के पं० एकनाथ, गुरुराव जी बुआ बेसबाचकर, रामपुर के कलबे अली खाँ आदि व्यक्तियों से गायन सीखा। सन् 1883 में बी० ए० और 1890 में एल० एल० बी० की परीक्षायें उत्तीर्ण की। इसके बाद कुछ समय तक वकालत भी करते रहे।

कार्य- आधुनिक काल में संगीत के शास्त्रीय पक्ष की ओर जनता का ध्यान आकर्षित करने का प्रथम श्रेय स्व० भातखंडे जी को है, जिन्होंने ही जनता को वे चक्षु प्रदान किये जिनके द्वारा संगीत के क्रियात्मक रूप के दर्शन हो सके। यह सत्य है कि क्रियात्मक संगीत की उचित प्रशंसा के लिये संगीत

Scanned with CamScanner

का थोड़ा बहुत ज्ञान आवश्यक है।

उन्होंने देश के विभिन्न भागों में भ्रमण किया और संगीत के प्राचीन ग्रंथों की खोज की। भ्रमण में उन्हें जहाँ कहीं भी कोई संगीत विद्वान मिला, उससे सम्पर्क मिलने गये। उससे भावों का विनिमय किया और जो कुछ भी ज्ञान धन देकर, सेवा कर अथवा शिष्य बनकर भी प्राप्त हो सका उनसे निःसंकोच प्राप्त किया। कहीं-कहीं तो उन्हें बहुत दिक्कतें उठानी पड़ीं, उनसे विभिन्न रागों के बहुत से गीत एकत्रित किये और उनकी स्वरलिपि 'भातखंडे क्रमिक पुस्तक' के 6 भागों में संग्रहीत कर जनता के सामने रखवा। यह वह समय था जब किसी व्यक्ति को, केवल एक गीत सीखने के लिये, सालों तक अपने गुरु की सेवा करनी पड़ती थी।

भातखंडे जी ने क्रियात्मक संगीत को लिखित रूप प्रदान करने के लिये एक नवीन स्वरलिपि पद्धति की रचना की, जो 'भातखंडे स्वरलिपि पद्धति' के नाम से प्रसिद्ध है।

इसके अतिरिक्त राग-वर्गीकरण की एक नवीन विधि - थाट राग वर्गीकरण के प्रचार करने का श्रेय भातखंडे जी को प्राप्त है।

जिस समय भारत में रेडियो नहीं था, उस समय भातखंडे जी ने संगीत के प्रचार हेतु संगीत सम्मेलनों की कल्पना की और सन् 1916

में बड़ौदा नरेश की सहायता से प्रथम संगीत सम्मेलन सफलता पूर्वक आयोजित की।
उस सम्मेलन में 'अखिल भारतीय संगीत अकादमी' स्थापित करने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हुआ।
सन् 1925 तक उन्होंने 5 वृहद् संगीत सम्मेलन आयोजित किये।

उनके द्वारा रचित मुख्य पुस्तकों की सूची इस प्रकार है:- 'हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति' (क्रमिक-पुस्तक मालिका 6 भागों में), भातखण्डे संगीत शास्त्र चार भागों में, अभिनव राग मंजरी, लक्ष्य संगीत, स्वर मालिका आदि।

इस प्रकार भातखण्डे जी जीवन पर्यन्त संगीत की अथक सेवा करते रहे और 11 सितम्बर 1936 को उनका स्वर्गवास हो गया।

=

Scanned with CamScanner